पशुपालक मित्र 3(3): 21-24; जुलाई, 2023
ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

औषधीय पौधों के गुण एवं उनकी उपयोगिता

डॉ. नम्रता उपाध्याय[1] रश्मि कुमारी[2] एवं डॉ. दिनेश कुमार[3]

1पीएचडी स्कॉलर, पशु चिकित्सा औषध और विष विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, एनडीवीएसयू, रीवा, मप्र.

2सहायक प्राध्यापक, संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, पटना, बिहार

3पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन महाविद्यालय, रांची, झारखंड

भारत में वानस्पतिक औषधियाँ अत्याधिक प्रचलित और लोकप्रिय हैं। हमारे पूर्वजों एवं ऋषियों ने मनुष्यों एवं पशुओं को रोगरहित करने एवं विभिन्न घातक व्याधियों से मुक्ति हेतु वानस्पतिक औषधियों को आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के माध्यम से उपलब्ध करवाया। जड़ी बूटियों की चिकित्सा पद्धति के विषय में अनेक संहिताओं में अनेक विद्वानों ने लिखा है पर चरक संहिता आयुर्वेद का सबसे प्राचीनतम एवं विस्तृत ग्रंथ है। प्राचीन काल में मानव अपनी बीमारी का इलाज वनौषधियों द्वारा करता था , लेकिन आज के आधुनिक युग में विलुप्त हो रहे जंगलों के कारण वनौषधियों की खेती की आवश्यकता पड़ने लगी है। आज औषधीय पौधों की खेती के अन्तर्गत उन सभी जड़ी बूटियों की खेती सम्मिलित की गई है जिनका उपयोग विभिन्न प्रकार की आयुर्वेद , एलौपेथिक तथा यूनानी एवं अन्य औषधियों बनाने में प्रयुक्त होता है।

औषधीय पौधों की खेती करना आर्थिक रूप से लाभकारी एवं मानव हित के लिए भी परम आवश्यक है। औषधीय पौधों की सफलतापूर्वक खेती के लिए सम्पूर्ण ज्ञान एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण जरूरी हो जाता है। औषधीय पौधों की पहचान , क्षेत्र की जलवायु , बाजार की मांग तथा उपलब्ध संसाधन का मिश्रित समावेश ही इसे सफल बनाता है। औषधीय फसल के माध्यम से लाभार्जन के लिए उचित विपणन व्यवस्था सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है।

1. **सतावर (एस्पेरागस रेसीमोसस)** : सतावरी की लताओं में बारीक सुईयों की समान पत्तियां एवं मटर के दाने के समान फल लगते हैं एवं जड़े मूली जैसी होती हैं । सतावर की कंदिल जड़े मधुर एवं रक युक्त होती हैं । इसकी जड़ों में शतावरिन **1** व शतावरिन **4** रसायन पाया जाता है ।

उपयोगः सतावर मेघाकारक, जठाराग्निवर्धक, पुष्टिदायक होता है। सतावर दूध बढ़ाने वाला है। इसकी जड़ों में एंटीबायोटिक तत्व होने से यह क्षय रोग में उपयोगी सिद्ध हुआ है। सतावर का उपयोग बलवर्धक टानिक, सेक्स टानिक, महिलाओं के लिए टानिक , ल्यूकोरिया तथा अनीमिया की दवाईयां बनाने में उपयोग होता है। सतावर भूख न लगने व पाचनशक्ति बढ़ाने हेतु टानिक बनाने के काम में आता है। सतावर मानसिक तनाव से मुक्ति दिलाने वाली दवाईयों में भी उपयोगी है।

2. नीम (एजैडीरक्टा इंडिका) : नीम का निम्बा का अर्थ है ''बीमारी से छुटकारा ''। नीम एक चमत्कारी गुण वाला पौराणिक एवं मंगलकारी वृक्ष है, जिसका उपयोग औषधी (यूनानी आयुर्वेदिक एवं सिद्ध), उर्वरक, कीटनाशक, कीट प्रतिकारक बनाने में किया जा रहा है । नीम का प्रत्येक भाग जड़ ,

छाल, तना, पत्ती एवं बीच सभी उपयोगी हैं । नीम वृक्ष पर्यावरण संतुलन , जैव उर्वरक एवं जैव कीटनाशकों के रूप में महत्वपूर्ण है। साधारण नीम के साथ ही अन्य प्रजाति यां जैसे- मीठा नीम/करी पौधा आकाश नीम , बकाइन एवं महानीम भी उपलब्ध हैं। निम्बोली में उपयोगी रसायन जैसे अजाडिरेक्टिन, मेलेयन्टियाल एवं सैलेनिंग और निम्बीडीन पाये जाते है ।

उपयोगः नीम के बीजों में ''निम्बिडिन'' रसायन का उपयोग विभिन्न औषधियों में मलहम , टूथपेस्ट, साबुन, कान्तिवर्धक औषधि, लोशन, शैम्पू, क्रीम, सिर के बालों के टानिक, कफनाशक दवाएं, बनाने में उपयोग होता है। अनाज व दालों के भण्डारण में कीटों की रोकथाम के लिए नीम की सूखी पत्तियों , बीज का चूर्ण, और नीम का तेल मिलाकर भण्डारण करते है। नीम की पत्तियों से घोल बनाकर फसलों पर छिड़काव करने से कीटों की रोकथाम की जा सकती है। नीम के अर्क/सक्रिय तत्व से बना साबुन चर्म रोगों में उपयोगी है। नीम की खली का उपयोग विभिनन फसलों में खाद के रूप में उपयोग किया जाता है। नीम की नई कोपलें सुबह पानी से खाने से रोग रोधी क्षमता बढ़ती हैं एवं पेट के कीड़े मरते हैं एवं खून साफ होकर चर्म रोग दूर होते हैं। नीम का गोंद , औषधी रूप में शक्तिवर्धक , शान्ती प्रदान करने वाला एवं मानसिक रोगों में प्रयुक्त होता है। नीम का पेड़ भूमि की उर्वरक क्षमता एवं जलधारण क्षमता को बढ़ाने की क्षमता रखते हैं। नीम की लकड़ी कवक रोधी , कीट रोधी होने से फर्नीचर एवं कृषि औजार बनाने के लिये उपयोगी है। नीम के तेल से कई औषधी निबोला , क्योरेनीन मलहम, नेमलेण्ड मलहम, सेन्सोल, नीम फ्लोर आदि बनाई जाती हैं। नीम की छाल से निकलने वाली गोंद का उपयोग शक्तिवर्धन दवाईयां बनाने तथा इसका उपयोग ज्वर , उल्टी होना, चर्म रोगों में प्रयुक्त औषधी में किया जाता है।

3. **सफेद मूसली (क्लोरोफायटम बोरीविलियम)** : सफेद मूसली एक वर्षीय **5-15** इंच ऊँचा पौधा है, जिसकी जड़े कंद में बदलकर खाद्य पदार्थ का संग्रह करती है। सफेद मसूली की **20** प्रजातियां पायी जाती हैं पर क्लोरोफायटम बोरीविलियम की ही श्रेष्ठ माना गया है , क्योंकि इसमें सेपोनिन एवं सपोंजेनिन नामक बहुमूल्य तत्व अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। सफेद मूसली विभिन्न दवाईयों के निर्माण में बहुउपयोगी जड़ है। इसका उपयोग-दूध बढ़ाने व प्रसवोपरान्त होने वाली बीमारियों तथा शिथिलता को दूर करने में होता है। सफेद मूसली त्रिदोषनाशक , बल एवं पुष्टीकारक औषधी है। नर में यह औषधी शुक्राणुवर्धक एवं कामशक्ति वर्धक है। महिलाओं में श्वेत प्रदर , रक्त स्त्राव, सोथ रोग आदि में लाभदायक है। रक्तदोष, अतिसार, दमा, क्षय एवं मधुमेय में उपयोगी हैं। कृषि द्वारा सफेद मूसली **3-4** क्विंटल प्रति एकड़ प्राप्त की जा सकती है। इसका बाजार भाव **1000-1100** रूपये प्रति किलोग्राम एवं विदेशों में **2500-3000** रूपये प्रति किलोग्राम है। सफेद मूसली की वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर **1** लाख रूपये प्रति एकड़ शुद्ध लाभ कमाया जा सकता है ।

4**. पत्थरचूर (कोलियस बारबेटस)** : पत्थरचूर एक बहुवर्षीय, मांसल क्षुप एवं सुगन्धित पौधा है। इसका कांड पीला , लाल या हरा होता है। इसकी जड़े कठोर एवं भीतरी भाग सफेद होता है। इसमें कोलिसनोल नामक तत्व पाया जाता है।

उपयोगः पत्थरचूर स्नेहन, कफनाशक, स्तभंक और मूत्रल होता है। पत्थरचूर, स्टोन/पथरी रोग में बहुत लाभकारी है क्योंकि इससे बार-बार पेशाब आने से पथरी गल कर बाहर निकल जाती है। पत्थरचूर ब्लड प्रेशर कम होने तथा हार्ट टानिक के रूप में भी बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।पेट की गड़बड़ी जैसे

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

आमातिसार और दूसरे प्रकार के दस्त लगने में पत्थरचूर लाभदायक है। पत्थरचूर का उपयोग अस्थमा , हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, नेत्र रोगों तथा कैंसर जैसे असाध्य रोगों में किया जाता है। कम उम्र में बालों को सफेद होने से बचाने बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है। इसका उपयोग पेट की बीमारियों में अचार एवं मुरब्बे के रूप में किया जाता है। पत्थरचूर की फसल में **2-2.5** टन सूखी जड़े प्रति हेक्टेयर की दर से प्राप्त हो जाती हैं। बाजार में इसका औसत मूल्य **4000.00** रूपये प्रति क्विंटल है।

5. **गुग्गल (कोम्मिफोरा वाईटिआई)** : गुग्गल एक झाड़ीनुमा **1.5** मीटर का बहुशाखीय पौधा है , जिसकी बढ़ने की गति बहुत धीमी होने से यह **500** साल तक पोषित रह सकता है। इस पौधे के तने एवं शाखाओं से गोंद सरीखा चिपचिपा पदार्थ निकलता है, जो गुग्गल के नाम से जाना जाता है।

उपयोगः गुग्गल को दिव्य औषधि के रूप में वर्णित किया गया है। यह नाड़ी संस्थान पर लाभकारी प्रभाव से शरीर में वात-संतुलन की स्थिति बनाये रखता है। इसका उपयोग उदर रोग , कृमिनाशक, यकृत उत्तेजक तथा अतिसार पर बहुउपयोगी है। गुग्गल रक्त के सफेद कण बढ़ाने में सहायक है। इसे नेत्ररोग, शिरारोग, हृदय रोग, अम्लपित्त आदि में गुणकारी माना गया है। इसका उपयोग दाँतों/मसूड़ों एवं पायरिया रोग एवं गले के अल्सर के उपचार में किया जाता है। गुग्गल के सौंदर्य प्रसाधन , अगरबत्ती एवं बाम के निर्माण में उपयोग किया जाता है। गुग्गल के **5** साल के एक पौधे से **100-120** ग्राम तक गोंद प्राप्त होता है, **10** साल के पौधे से **2** किलो गोंद प्राप्त होता है। कृषि करने से प्रति हेक्टयर **5000** किलो गोंद प्राप्त होता है। गोंद का बाजार भाव **150-200** रूपये प्रति किलो है।

6. **शंखपुष्पी (क्न्वाल्यूलस प्ल्यूरीकालिस)** : शंखपुष्पी तीन प्रजातियों- श्वेत, रक्त व नील पुष्पी उपलब्ध हैं सिर्फ श्वेत शंखपुष्पी ही बहुउपयोगी है। यह वर्षा ऋतु में लगती है जिसके पुष्प शंख आकार के होते हैं।

उपयोग: शंखपुष्पी औषधी के रूप में त्रिदोष नाषक है । शंखपुष्पी का उपयोग मानसिक रोगों के निवारण हेतु किया जाता है , क्योंकि यह बुद्धिवर्धक है। यह भावप्रकाश में कब्जनाशक , मानसरोगहर, रसायन गुणवाली है। यह स्मृति कान्ति , अग्नि प्रदायक, अपस्मार (मिरगी), कुष्ठ कृमि के विष को खत्म करती है। श्वेत शंखपुष्पी में क्न्वाल्युलिन नामक रसायन पाया जाता है जिसका उपयोग श्वसनी शोथ , पित्तदोष एवं मिरगी जैसे बीमारियों के इलाज में होता है। क्न्वाल्युलिन को तेल में मिलाकर उपयोग करने से बालों की वृद्धि होने लगती है। श्वेत शंखपुष्पी के ताजे फूलों को शहद के साथ सेवन करने से याददाशत बढ़ने लगती है। शंखपुष्पी की फसल औसतन **20** क्विंटल प्रति हेक्टयर प्राप्त हो जाती है। बाजार में श्वेत शंखपुष्पी के पौधे **2000** रूपये प्रति क्विंटल तक बिकते है।

7. **लैमनग्रास (साइम्होफेगन साइटरस)** : लैमनग्रास एक नींबू की खुशबू वाला घास जिसकी पत्तियों को आसवित करके नींबू की सुगंध वाला तेल प्राप्त होता है। लैमनग्रास का औषधीय महत्व है।

उपयोगः विभिन्न खाद्य एवं पेय पदार्थों में उपयोग किया जाता है। लैमनग्रास की सूखी पत्तियों हर्बल चाय का एक प्रमुख अवयव है। लैमनग्रास के तेल का उपयोग विभिन्ने रूप में जैसे साबुन , तेल, परफूयम आदि में किया जाता है। लैमनग्रास को दवाईयों के निर्माण में उपयोग होता है। लैमनग्रास के दानों की पैदावार **18** क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त होती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

सतावर	नीम	सफेद मूसली
पत्थरचूर	गुग्गल	शंखपुष्पी

लैमनग्रास